पुत्र श्री उज्ज्वल लाहिड़ी के इन्दौर (भारत)
स्थित निवास से नव सहस्त्राब्दि सन्देश
ङ्गरवरी ०८, २०००

सन्देश संख्या १६

# पीड़ा की घोर व्यथा का मूल कारण तथा दस मौलिक अनुशासन

पीड़ा की घोर व्यथा का मूल कारण :

१. अन्ध विश्वासों ने अज्ञेय एवम् अनाममय के क्षेत्र में अतिक्रमण किया है।

२. शून्यता के परमानन्द की अपेक्षा अनुभवों का बोझ अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

३. सम्बन्धों में कल्पित छवि का हस्तक्षेप हो रहा है।

४. अहंभाव अस्तित्व की स्थिति पर आधिपत्य करना चाह रहा है।

दस मौलिक अनुशासन :

१. किसी भी चीज पर सहसा विश्वास न करें। अपने विश्वासों और अनुभवों की, धर्म ग्रन्थों, प्राधिकारों और प्रकाशित सामग्री के कूड़े कचरे से निकली हुई व्याख्या से नहीं बल्कि विश्वासों और अनुभवों के यथार्थ स्वरूप की अन्तर्दृष्टि के माध्यम से समीक्षा करते हुए परीक्षा करें। कृपया इन्हें समझेंः–

(अ) विश्वास भाग दौड़ है, समझदारी भगवत्ता है।

(ब) विश्वास प्रलोभन है, समझदारी प्रशान्ति है।

(स) विश्वास उत्तेजना है, समझदारी उन्मना है।

(द) विश्वास धर्मान्धता एवं संघर्ष है, समझदारी धर्म–प्रगाढ़ता एवं सहजानन्द है।

२. यह दावा न करें कि आपकी आस्था ही सर्वोत्तम तथा अन्तिम सत्य है। यह अन्वेषण करें कि आपकी आस्था आपके, आपके परिवार, समाज, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय अन्तर्द्वन्द्व को कम कर सकता है या नहीं। आपकी आस्था बन्धन न हो बल्कि मुक्ति का साधन हो।

३. बहिर्मुखी गतिविधियों के माध्यम से मन की कल्पित कथाओं, शरारतों और व्याधियों की वास्तविकता से पलायन न करें बल्कि अन्तर्मुखी प्रत्यक्षबोध एवम् अध्यवसाय द्वारा मानसिक स्थिति का सामना करें। इस प्रकार हर रूप में चित्तवृत्ति की हिंसा को समाप्त करने के लिए रूपान्तरण का सृजन करें।

४. विकल्पों, वर्गीकरणों, लालसाओं और विरोधों के माध्यम से संवेदी प्रत्यक्षों को विषयासक्ति में परिवर्तित न करें। सदैव स्थितप्रज्ञ अवस्था में रहें।

५. सूचना एवं जानकारी का मात्र व्यावहारिक उद्‌देश्यों के लिए प्रयोग करें। किसी सूचना में निहित स्वार्थ का समावेश न करें। सूचनाओं में न तो उलझें, न उसमें आसक्त हों, न उससे प्रभावित हों अथवा न ही उससे अवरूद्ध हों। सूचनाओं के अस्तित्व के बावजूद सूचनाओं से मुक्ति मानव मस्तिष्क का वैशिष्ट्य है जो कि कम्प्यूटर में संभव नहीं है। रूपान्तरण के बिना सूचना मात्र गप है।

६. जीवन का अर्थ न पूछें। जीवन अपनी समग्रता में इतनी रमणीयता से इसीलिए अस्तित्ववान है क्योंकि इसका बिल्कुल ही कोई अर्थ नहीं निकल सकता। जीवन का अर्थ पूछना हत्या एवम् आत्महत्या का आवाहन होगा। जीवन के अर्थ की व्यर्थ एवं कदर्य खोज में मन साम्प्रदायिक विश्वासों की अनाप–शनाप की भ्रान्तियों तथा अन्य छद्म आदर्शों के लिए मरने और मारने की प्रवृत्ति में अपने को उकसाता है। मन, जो कि क्षणभंगुर है, अर्थ के आविष्कार द्वारा अपने को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास करता है जबकि जीवन का अस्तित्व प्रजनन, जीवन एवं समापन में है जिसके प्रतीक ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं।

७. अपने क्षेत्र में केवल एक स्थान पर गहराई से खोदें। केवल तभी आपको जल प्राप्त होगा। यदि आप अनेक स्थानों पर बिना गहराई के खोदते रहेंगे तो आप अपने क्षेत्र को ही नष्ट करेंगे और जल स्तर तक नहीं पहुँच सकेंगे।

८. गुरू को केवल मानसिक तुष्टि के लिए प्रयोग न करें क्योंकि तब गुरू मात्र एक शिक्षक हैं। यदि अपने जीवन में उनका स्पर्श प्राप्त करें तो गुरू प्रेमावतार हैं। अपने को समग्रता से तदनुरूप होने दें, तब गुरू आधार यानी अस्तित्व की पवित्र भूमि हैं और यही है ईश्वरत्व।

९. जन्म और मृत्यु की आवृत्ति एवं पुनरावर्तन के सड़न पर जागरूक रहें। संसार चक्र में परिरूद्ध होने के बजाय उससे निरासक्त रहें। यही वास्तविक संन्यास है, न कि मात्र वेशभूषा।

१०. ध्यानशील बनें। जिसमें आपकी श्रद्धा हो उसी पर ध्यान करें। चित्तविक्षेप पर भी ध्यान करें। ध्यानशील अस्तित्व अनुभव का विलास नहीं है। प्रत्यक्षबोध के बिना अभ्यास अपवित्र है।

क्रियावानों को प्रेमाशीष।